सद्धर्मपुण्डरीकसूत्रम्
अधिमुक्तिपरिवर्तः।

adhimukti *buddh. f.* - наклонность, предпочтение; привязанность;

अथ खल्वायुष्मान् सुभूतिरायुष्मांश्च महाकात्यायनः आयुष्मांश्च महाकाश्यपः आयुष्मांश्च महामौद्गल्यायनः इममेवंरूपमश्रुतपूर्वं धर्मं श्रुत्वा

subhūti, mahākātyāyana, mahākāśyapa. mahāmaudgalyāyana - *nom. pr.* ученики Будды;

भगवतोऽन्तिकात्संमुखमायुष्मतश्च शारिपुत्रस्य व्याकरणं श्रुत्वा अनुत्तरायां सम्यक्संबोधौ आश्चर्यप्राप्ता अद्भुतप्राप्ता औद्बिल्यप्राप्तास्तस्यां वेलायामुत्थायासनेभ्यो येन भगवांस्तेनोपसंक्रामन्।

antikād *adv.* - от;

vyākaraṇa *n* - различие, анализ, грамматика; *buddh.* объяснение, разъяснение; предсказание;

audbilya *buddh.n* - радость, радостное волнение;

upa-saṃ√kram (upasaṃkrāmati P./upasaṃkramate Ā.) - ступать, подходить, переходить; *buddh.* - подходить, приближаться; наступать,

उपसंक्रम्य एकांसमुत्तरासङ्गं कृत्वा दक्षिणं जानुं पृथिव्यां प्रतिष्ठाप्य येन भगवांस्तेनाञ्जलिं प्रणम्य भगवन्तमभिमुखमुल्लोकयमाना अवनतकाया अभिनतकायाः प्रणतकायास्तस्यां वेलायां भगवन्तमेतदवोचन्

aṅsa *m* - плечо;

uttarāsaṅga *m* - верхняя одежда;

jānu *m, n,* jānu-maṇḍala *n* - колено;

ul√lok I P. - смотреть с почтением или уважением на к.-л.;

ava√nam, abhi√nam, pra√ṇam I P. - поклоняться, склоняться, кланяться;

वयं हि भगवन्जीर्णा वृद्धा महल्लका अस्मिन्भिक्षुसंघे स्थविरसंमता जराजीर्णीभूता निर्वाणप्राप्ताः स्म

mahallaka *buddh.* - старый, старший;

sthavira - старый, важный, знатный, почтенный, уважаемый;

इति भगवन् निरुद्यमा अनुत्तरायां सम्यक्संबोधावप्रतिबलाः स्मः, अप्रतिवीर्यारम्भाः स्मः।

udyama *m* - усилие, напряжение; старание, усердие;

pratibala - равный по силе к.-л., подобный к.-л., способный на ч.-л.;

aprativīryārambha (aprativīrya-ārambha) *buddh.* - не имеющий достаточно энергии для к.-л. дела;

यदापि भगवान्धर्मं देशयति, चिरं निषण्णश्च भगवान्भवति,

√deśaya *buddh.* - учить, сообщать; показывать;

वयं च तस्यां धर्मदेशनायां प्रत्युपस्थिता भवामः,

deśanā *f buddh.* - наставление, поучение, проповедь; исповедь;

pratyupasthita (p.p. *от* praty-upa-√sthā) *buddh.* - прислуживающий; присутствовавший, сопутствующий; вовлеченный;

तदाप्यस्माकं भगवन् चिरं निषण्णानां भगवन्तं चिरं पर्युपासितानामङ्गप्रत्यङ्गानि दुःखन्ति, संधिविसंधयश्च दुःखन्ति।

pratyaṅga *n* - небольшая часть тела, раздел;

saṅdhi *m* - соединение, слияние; сустав, сочленение;

visaṅdhi *m buddh.* - малое сочленение (тела);

√duḥkh *den.* P. *buddh.* - болеть, мучиться;

ततो वयं भगवन् भगवतो धर्मं देशयमानस्य शून्यतानिमित्ताप्रणिहितं सर्वमाविष्कुर्मः।

śūnyatā *f* - пустота;

animitta - беспричинный; *n* беспричинность;

apraṇihita - непривязанный, не имеющий цели; (*n*) непривязанность, свобода от желаний и стремлений;

āvis√kar VIII U. - открывать, обнаруживать;

नास्माभिरेषु बुद्धधर्मेषु बुद्धक्षेत्रव्यूहेषु वा बोधिसत्त्वविक्रीडितेषु वा तथागतविक्रीडितेषु वा स्पृहोत्पादिता।

dharma *m* – положение, состояние, правило, закон, законность, долг, обязанность, религия, нравственное достоинство, благочестие, праведность, добродетель; *buddh.* элементарная единица психики субъекта, носитель одного качества; характерная черта, свойство, качество; идея;

(buddha)-kṣetra *m* - поле Будды; вселенная или система миров, где обитает Будда;

vyūha *m* - *buddh.* проявление (*особенно* сверхъестественное), великолепие; приведение в порядок, украшение;

vikrīḍita *n* - состязание; чудо, проявление сверхъестественных способностей;

तत्कस्य हेतोः? यच्चास्माद्भगवंस्त्रैधातुकान्निर्धाविता निर्वाणसंज्ञिनः, वयं च जराजीर्णाः।

traidhātuka *n* - три мира;

nir√dhāv I P. - бежать, исчезать;

saṅjñin *buddh.* - осознающий; имеющий представление о ч.-л.; имеющий неправильное представление, иллюзию насчет ч.-л.;

ततो भगवन् अस्माभिरप्यन्ये बोधिसत्त्वा अववदिता अभूवन्ननुत्तरायां सम्यक्संबोधौ, अनुशिष्टाश्च।

ava√vad I P. - советовать, наставлять в ч.-л.;

anu√śās (II P., p.p. anuśiṣṭa) - поучать, наставлять, указывать;

न च भगवंस्तत्रास्माभिरेकमपि स्पृहाचित्तमुत्पादितमभूत्।

ते वयं भगवन्नेतर्हि भगवतोऽन्तिकाच्छ्रावकाणामपि व्याकरणमनुत्तरायां सम्यक्संबोधौ भवतीति श्रुत्वा

आश्चर्याद्भुतप्राप्ता महालाभप्राप्ताः स्मः।

भगवन्नद्य सहसैवेममेवंरूपमश्रुतपूर्वं तथागतघोषं श्रुत्वा महारत्नप्रतिलब्धाश्च स्मः।

ghoṣa *m* - шум, крик, звук (речи); слух, молва; *buddh.* воззвание, провозглашение; объявление;

भगवन् अप्रमेयरत्नप्रतिलब्धाश्च स्मः।

भगवन् अमार्गितमपर्येष्टमचिन्तितमप्रार्थितं चास्माभिर्भगवन्निदमेवंरूपं महारत्नं प्रतिलब्धम्।

√mārg X P. - искать;

parīṣ (pari√iṣ, paryeṣati I U.) - искать; caus. (paryeṣayati) искать;

prārth (pra√arth) X Ā. - добиваться, желать, жаждать; требовать, просить о чем-либо (*+Acc.*);

प्रतिभाति नो भगवन्, प्रतिभाति नः सुगत।

prati√bhā II P. - сиять, являться, проявляться; становиться ясным, делаться очевидным;

तद्यथापि नाम भगवन् कश्चिदेव पुरुषः पितुरन्तिकादपक्रामेत्।

सोऽपक्रम्य अन्यतरं जनपदप्रदेशं गच्छेत्।

janapada *m* - земля, страна, государство; население, народ;

स तत्र बहूनि वर्षाणि विप्रवसेद् विंशतिं वा त्रिंशद्वा चत्वारिंशद्वा पञ्चाशद्वा।

vi-pra√vas I U. - начинать путешествие, уехать за границу, жить за границей; *buddh.* быть разделенным;

अथ स भगवन् महान् पुरुषो भवेत्। स च दरिद्रः स्यात्।

स च वृत्तिं पर्येषमाण आहारचीवरहेतोर्दिशो विदिशः प्रक्रामन् अन्यतरं जनपदप्रदेशं गच्छेत्।

vṛtti *f* - деятельность, работа, средства к существованию; образ действия, поведение;

cīvara *n* - монашеское одеяние;

pra√kram (I U. prakrāmati/prakramate) - идти, следовать, выступать;

तस्य च स पिता अन्यतमं जनपदं प्रक्रान्तः स्यात्।

बहुधनधान्यहिरण्यकोशकोष्ठागारश्च भवेत्।

kośa *n* - сундук, шкаф; словарь; кладовая, сокровищница;

koṣṭhāgāra (koṣṭha-agāra) *n* - склад, кладовая;

बहुसुवर्णरूप्यमणिमुक्तावैडूर्यशङ्खशिलाप्रवालजातरूपरजतसमन्वागतश्च भवेत्।

suvarṇa - золотой; *n* золото, деньги, богатство;

rūpya *n* - серебро, золотая или серебряная монета;
vaiḍūrya *m, n* - ляпис-лазурь, кошачий глаз;
śaṅkhaśilā (śaṅkha-śilā) *f* - вид драгоценного камня;
pravāla *m, n* - коралл;
jatārūpa - прекрасный, сверкающий, золотой; *n* золото;
rajata *n* - серебро;
samanvāgata *buddh.* - сопровождаемый, наделенный, снабженный, украшенный ч.-л.;

बहुदासीदासकर्मकरपौरुषेयश्च भवेत्।

बहुहस्त्यश्वरथगवेडकसमन्वागतश्च भवेत्।

eḍaka *m* - овца;

महापरिवारश्च भवेत्। महाजनपदेषु च धनिकः स्यात्।

आयोगप्रयोगकृषिवणिज्यप्रभूतश्च भवेत्॥

āyoga *m buddh.* - деятельность; накопление;
prayoga *m* - вложение денег, кредитование;

अथ खलु भगवन् स दरिद्रपुरुष आहारचीवरपर्येष्टिहेतोर्ग्रामनगरनिगमजनपदराष्ट्रराजधानीषु पर्यटमानोऽनुपूर्वेण यत्रासौ पुरुषो बहुधनहिरण्यसुवर्णकोशकोष्ठागारस्तस्यैव पिता वसति, तन्नगरमनुप्राप्तो भवेत्।

paryeṣṭi *f buddh.* - стремление, поиск ч.-л.;
pary√aṭ I U. - бродить, путешествовать, скитаться, странствовать;
anupūrveṇa *adv.* - один за другим, по очереди;

अथ खलु भगवन् स दरिद्रपुरुषस्य पिता बहुधनहिरण्यकोशकोष्ठागारस्तस्मिन्नगरे वसमानस्तं पञ्चाशद्वर्षनष्टं पुत्रं सततसमितमनुस्मरेत्।

samitam *adv.* - постоянно, непрерывно, всё время, всегда;

समनुस्मरमाणश्च न कस्यचिदाचक्षेदन्यत्रैक एवात्मनाध्यात्मं संतप्येदेवं च चिन्तयेत्

ā√cakṣ II Ā. - рассказывать, называть;
adhyātma - собственный, свой;

अहमस्मि जीर्णो वृद्धो महल्लकः।

प्रभूतं मे हिरण्यसुवर्णधनधान्यकोशकोष्ठागारं संविद्यते न च मे पुत्रः कश्चिदस्ति।

मा हैव मम कालक्रिया भवेत्सर्वमिदमपरिभुक्तं विनश्येत्।

kālakriyā (kāla-kriyā) *f buddh.* - смерть;
pari√bhuj (VII U., p.p. paribhukta) - есть, наслаждаться, тратить;

स तं पुनः पुनः पुत्रमनुस्मरेत्

अहो नामाहं निर्वृतिप्राप्तो भवेयं यदि मे स पुत्र इमं धनस्कन्धं परिभुञ्जीत॥

nirvṛti *f* - счастье, удовлетворенность; удовольствие;

अथ खलु भगवन् स दरिद्रपुरुष आहारचीवरं पर्येषमाणोऽनुपूर्वेण येन तस्य प्रभूतहिरण्यसुवर्णधनधान्यकोशकोष्ठागारस्य समृद्धस्य पुरुषस्य निवेशनं तेनोपसंक्रामेत्।

samṛddha (p.p. *om* sam√ṛdh) - успешный, процветающий, богатый;

अथ खलु भगवन् स तस्य दरिद्रपुरुषस्य पिता स्वके निवेशनद्वारे महत्या ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्रपरिषदा परिवृतः पुरस्कृतो महासिंहासने सपादपीठे सुवर्णरूप्यप्रतिमण्डिते उपविष्टो हिरण्यकोटीशतसहस्रैर्व्यवहारं कुर्वन् वालव्यजनेन वीज्यमानो विततविताने पृथिवीप्रदेशे मुक्तकुसुमाभिकीर्णे रत्नदामाभिप्रलम्बिते महत्यद्ध्योपविष्टः स्यात्।

pariṣad (*buddh.* parṣad) *f* - собрание, публика (в драме);
viś *f* место жительства; племя, народ, третья варна – вайшьи;
puras√kar VIII U. - дать преимущество, оказывать честь;

pādapīṭha (pāda-pīṭha) *m* - скамеечка для ног, подставка для ног;
parimaṇḍita - украшенный по кругу ч.-л.;
hiraṇya *n* - золото, золотая монета, деньги;
vyavahāra *m* - поступок, действие, торговля; выражение, обсуждение ч.-л.;
vālavyajana, valavyañjana *n* - опахало из ячьего хвоста;
√vīj I U. - обмахивать, обдувать;
vitāna *m, n* - балдахин, полог, навес, тент;
dāma *n* - лента, тесьма, шнур; гирлянда;
ṛddhi *f* - счастье, успех, удача, благополучие; *buddh.* сверхъестественная магическая сила;

अद्राक्षीत् स भगवन् दरिद्रपुरुषस्तं स्वकं पितरं स्वके निवेशनद्वारे एवंरूपयर्द्ध्योपविष्टं महता जनकायेन परिवृतं गृहपतिकृत्यं कुर्वाणम्।

kāya *m* - тело; *buddh.* собрание, большое количество, толпа;
kṛti *f* - дело;

दृष्ट्वा च पुनर्भीतस्त्रस्तः संविग्नः संहृष्टरोमकूपजात उद्विग्नमानस एवमनुविचिन्तयामास

√tras (I P. trasati) дрожать, бояться, трястись;
saṃ√vij (VI Ā., p.p. saṃvigna) - пугаться;
saṅ√harṣ I P. - радоваться; содрогаться;
romakūpa (roma-kūpa) *m, n* - пора (на теле);
ud√vij (VI Ā., p.p. udvigna) - бояться, дрожать, испытывать ужас;

सहसैवायं मया राजा वा राजमात्रो वा आसादितः।

rājamātra (rāja-mātra) *m* - обладающий царской властью; *buddh.* наместник, правитель, министр;

नास्त्यस्माकमिह किंचित् कर्म।

गच्छामो वयं येन दरिद्रवीथी, तत्रास्माकमाहारचीवरमल्पकृच्छ्रेणैव उत्पत्स्यते।

vīthī *f* - улица;
kṛcchra - трудный, тяжкий, опасный; *m, n* затруднение, опасность, зло, горе; *In. Abl. adv.* с трудом;

अलं मे चिरं विलम्बितेन। मा हैवाहमिह वैष्टिको वा गृह्येयान्यतरं वा दोषमनुप्राप्नुयाम्॥

vi√lamb I Ā. - опаздывать, медлить;
vaiṣṭika *m buddh.* - работающий на принудительных работах, подневольный работник;
doṣa *m, n* - недостаток, изъян; ошибка, промах, вина, грех; вред, болезнь;

अथ खलु भगवन् स दरिद्रपुरुषो दुःखपरंपरामनसिकारभयभीतस्त्वरमाणः प्रक्रामेत् पलायेत्, न तत्र संतिष्ठेत्।

manasikāra (manasi-kāra) *m buddh.* - мысль, размышление, сосредоточение, внимание;

अथ खलु भगवन् स आढ्यः पुरुषः स्वके निवेशनद्वारे सिंहासन उपविष्टस्तं स्वकं पुत्रं सहदर्शनेनैव प्रत्यभिजानीयात्।

praty-abhi√jñā IX U. - узнавать, помнить, знать, понимать;

दृष्ट्वा च पुनस्तुष्ट उदग्र आत्तमनस्कः प्रमुदितः प्रीतिसौमनस्यजातो भवेत्, एवं च चिन्तयेत्

āttamanas(ka), āptamanas *buddh.* - радостный, обрадованный, довольный; восхищенный;
saumanasya - радующий; *n* радость, жизнерадостность; удовлетворенность;

आश्चर्यं यावद् यत्र हि नाम अस्य महतो हिरण्यसुवर्णधनधान्यकोशकोष्ठागारस्य परिभोक्ता उपलब्धः।

paribhoktar - поедающий, наслаждающийся, использующий;

अहं चैतमेव पुनः पुनः समनुस्मरामि। अयं च स्वयमेवेहागतः। अहं च जीर्णो वृद्धो महल्लकः॥

sam-anu√smar I P. - *buddh.* помнить, вспоминать;

अथ खलु भगवन्स पुरुषः पुत्रतृष्णासंपीडितस्तस्मिन् क्षणलवमुहूर्ते जवनान् पुरुषान् संप्रेषयेत्-गच्छत मार्षा एतं पुरुषं शीघ्रमानयध्वम्।

javana - быстрый, скорый, стремительный;
mārṣa - *buddh.* (обычно Voc.) почтенный, уважаемый; друг;

अथ खलु भगवंस्ते पुरुषाः सर्व एव जवेन प्रधावितास्तं दरिद्रपुरुषमध्यालम्बेयुः।

adhy-ā√lamb I U.- хватать;

अथ खलु दरिद्रपुरुषस्तस्यां वेलायां भीतस्त्रस्तः संविग्नः संहृष्टरोमकूपजातः उद्विग्नमानसो दारुणमार्तस्वरं मुञ्चेदारवेद्विरवेत्।

velā *f* - время, срок; час, минута;
dāruṇa - страшный, твердый, суровый, строгий, резкий, сильный;
ārta (*p.p. от* ā√ar) - несчастный, страдающий, угнетенный, измученный, опечаленный, скорбный;

नाहं युष्माकं किंचिदपराध्यामीति वाचं भाषेत।

अथ खलु ते पुरुषा बलात्कारेण तं दरिद्रपुरुषं विरवन्तमप्याकर्षेयुः।

balātkāreṇa (balāt-kāreṇa) *adv.* - сильно; насильственно, принудительно, против воли;

अथ खलु स दरिद्रपुरुषो भीतस्त्रस्तः संविग्न उद्विग्नमानस एवं च चिन्तयेत्

मा तावदहं वध्यो दण्डयो भवेयम्। नश्यामीति।

स मूर्छितो धरण्यां प्रपतेत्, विसंज्ञश्च स्यात्। आसन्ने चास्य स पिता भवेत्।

mūrchita (p.p. *от* √mūrch) - ослабевший, оцепеневший, остолбеневший, потерявший сознание;
visaṅjña - без чувств, без сознания, безжизненный;

स तान् पुरुषानेवं वदेत्-मा भवन्त एतं पुरुषमानयन्त्विति।

तमेनं शीतलेन वारिणा परिसिञ्चित्वा न भूय आलपेत्। तत्कस्य हेतोः?

जानाति स गृहपतिस्तस्य दरिद्रपुरुषस्य हीनाधिमुक्तिकतामात्मनश्चोदारस्थामताम्। जानीते च ममैष पुत्र इति॥

adhimuktikatā *f buddh.* - страстная заинтересованность, рьяная увлеченность ч.-л.;
sthāman *n* - место, положение; сила;

अथ खलु भगवन् स गृहपतिरुपायकौशल्येन न कस्यचिदाचक्षेन्ममैष पुत्र इति।

upāyakauśalya (upāya-kauśalya) *n buddh.*- искусство уловок;

अथ खलु भगवन् स गृहपतिरन्यतरं पुरुषमामन्त्रयेत्-गच्छ त्वं भोः पुरुष।

ā√mantraya Ā. - обращаться, окликать, звать;

एनं दरिद्रपुरुषमेवं वदस्व-गच्छ त्वं भोः पुरुष येनाकाङ्क्षसि। मुक्तोऽसि।

एवं वदति स पुरुषस्तस्मै प्रतिश्रुत्य येन स दरिद्रपुरुषस्तेनोपसंक्रामेत्।

उपसंक्रम्य तं दरिद्रपुरुषमेवं वदेत्-गच्छ त्वं भोः पुरुष येनाकाङ्क्षसि। मुक्तोऽसीति।

अथ खलु स दरिद्रपुरुष इदं वचनं श्रुत्वा आश्चर्याद्भुतप्राप्तो भवेत्।

स उत्थाय तस्मात्पृथिवीप्रदेशाद्येन दरिद्रवीथी तेनोपसंक्रामेदाहारचीवरपर्येष्टिहेतोः।

अथ खलु स गृहपतिस्तस्य दरिद्रपुरुषस्याकर्षणहेतोरुपायकौशल्यं प्रयोजयेत्।

ākarṣaṇa *n* - влечение, привлечение;
pra√yojaya (caus. *от* pra√yuj) - бросать, метать; направлять, посылать; сосредотачивать ум; предпринимать, совершать, устраивать; представлять (на сцене);

स तत्र द्वौ पुरुषौ प्रयोजयेद्दुर्वर्णावल्पौजस्कौ

ojaska *n buddh.* - сила;

-गच्छतां भवन्तौ योऽसौ पुरुष इहागतोऽभूत्,

तं युवां द्विगुणया दिवसमुद्रया आत्मवचनेनैव भरयित्वेह मम निवेशने कर्म कारापयेथाम्।

dviguṇa - двойной;
mudrā *f buddh.*- счет; монета; заработная плата;

सचेत् स एवं वदेत्-किं कर्म कर्तव्यमिति, स युवाभ्यामेवं वक्तव्यः

-संकारधानं शोधयितव्यं सहावाभ्यामिति।

saṅkāra *m buddh.* - грязь, мусор; навоз, экскременты;
-dhāna *n buddh.* - хранилище, вместилище, место;

अथ तौ पुरुषौ तं दरिद्रपुरुषं पर्येषयित्वा तया क्रियया संपादयेताम्।

saṃ√pādaya (*caus. от* saṃ√pad) - осуществлять, делать; предоставлять, обеспечивать (+In.);

अथ खलु तौ द्वौ पुरुषौ स च दरिद्रपुरुषो वेतनं गृहीत्वा तस्य महाधनस्य पुरुषस्यान्तिकात्तस्मिन्नेव निवेशने संकारधानं शोधयेयुः।

vetana *n* - жалование, заработная плата;

तस्यैव च महाधनस्य पुरुषस्य गृहपरिसरे कटपलिकुञ्चिकायां वासं कल्पयेयुः।

parisara *m* - близость; окружение;
kaṭapalikuñcikā (kaṭa-palikuñcikā) *f buddh.* - соломенная хижина;

स चाढ्यः पुरुषो गवाक्षवातायनेन तं स्वकं पुत्रं पश्येत् संकारधानं शोधयमानम्।

gavākṣa (gava-akṣa) *m* - круглое окно, отдушина, вентиляционное отверстие;
vātāyana *n* - окно;

दृष्ट्वा च पुनराश्चर्यप्राप्तो भवेत्॥

अथ खलु स गृहपतिः स्वकान्निवेशनादवतीर्यापनयित्वा माल्याभरणान्यपनयित्वा मृदुकानि वस्त्राणि, चौक्षाण्युदाराणि मलिनानि वस्त्राणि प्रावृत्य, दक्षिणेन पाणिना पिटकं परिगृह्य पांसुना स्वगात्रं दूषयित्वा दूरत एव संभाषमाणो येन स दरिद्रपुरुषस्तेनोपसंक्रामेत्।

caukṣa - чистый;
prā√var (pra-ā√var) V U.- покрывать, надевать ч.-л.;
piṭaka *n* - корзина, ящик;
pāṅsu *m* - земля, пыль, песок;
dūratas *adv.* - далеко, издалека;

उपसंक्रम्यैवं वदेत्-वहन्तु भवन्तः पिटकानि, मा तिष्ठत, हरत पांसूनि।

अनेनोपायेन तं पुत्रमालपेत् संलपेच्च। एनं वदेत्-इहैव त्वं भोः पुरुष कर्म कुरुष्व।

मा भूयोऽन्यत्र गमिष्यसि। सविशेषं तेऽहं वेतनकं दास्यामि।

येन येन च ते कार्य भवेत्, तद्विश्रब्धं मां याचेः, यदि वा कुण्डमूल्येन यदि वा कुण्डिकामूल्येन यदि वा स्थालिकामूल्येन यदि वा काष्ठमूल्येन यदि वा लवणमूल्येन यदि वा भोजनेन यदि वा प्रावरणेन।

kārya (*p.n. от* √kar VIII U.) *n* - дело, работа; намерение; обязанность; нужда (+In.);
viśrabdha (p.p.*от* vi√śrambh) - доверчивый, уверенный, бесстрашный, спокойный; viśrabdham *adv.* - доверчиво, спокойно, без страха;
kuṇḍa *n* - чаша, котелок, сосуд для воды;
mūlya - основной; *n* цена, ценность, достояние;
kuṇḍikā *f* - котелок, сосуд для воды;
sthālikā *f buddh.* - небольшой сосуд;
prāvaraṇa *n* - плащ, верхняя одежда;

अस्ति मे भोः पुरुष जीर्णशाटी। सचेत्तया ते कार्यं स्यात्, याचेः, अहं तेऽनुप्रदास्यामि।

śāṭī *f* - платье, одежда;
anu-pra√dā (III P. anupradadāti) *buddh.* - дать, подарить;

येन येन ते भोः पुरुष कार्यमेवंरूपेण परिष्कारेण, तं तमेवाहं ते सर्वमनुप्रदास्यामि।

pariṣkāra *m buddh.* - имущество, личные вещи, посуда, утварь;

निर्वृतस्त्वं भोः पुरुष भव। यादृशस्ते पिता, तादृशस्तेऽहं मन्तव्यः।

nirvṛta (p.p. *от* nir√var) - счастливый; *buddh.* освобожденный, вошедший в нирвану;

तत्कस्य हेतोः? अहं च वृद्धः, त्वं च दहरः।

dahara *buddh.* - молодой;

मम च त्वया बहु कर्म कृतमिमं संकारधानं शोधयता।

न च त्वया भोः पुरुष अत्र कर्म कुर्वता शाठ्यं वा वक्रता वा कौटिल्यं वा मानो वा म्रक्षो वा कृतपूर्वः करोषि वा।

śāṭhya *n* - обман, хитрость, коварство; ложь, вероломство; бесчестность, безнравственность:
vakratā *f* - изогнутость; испорченность, лживость, двуличность;
kauṭilya *m* - изгиб, кривизна, фальшь, бесчестность;
māna *m* - мнение, самомнение, гордость;
mrakṣa *m* - утаивание греха, лживость, лицемерие;

सर्वथा ते भोः पुरुष न समनुपश्याम्येकमपि पापकर्म, यथैषामन्येषां पुरुषाणां कर्म कुर्वतामिमे दोषाः संविद्यन्ते।

यादृशो मे पुत्र औरसः, तादृशस्त्वं मम अद्याग्रेण भवसि॥

अथ खलु भगवन् स गृहपतिस्तस्य दरिद्रपुरुषस्य पुत्र इति नाम कुर्यात्।

स च दरिद्रपुरुषस्तस्य गृहपतेरन्तिके पितृसंज्ञामुत्पादयेत्।

saṅjñā *f* - сознание, осознание; восприятие; память, чувства; представление, мысленный образ;

अनेन भगवन् पर्यायेण स गृहपतिः पुत्रकामतृषितो विंशतिवर्षाणि तं पुत्रं संकारधानं शोधापयेत्।

paryāya *buddh. m* - предрасположенность, склонность, намерение; путь, способ, средство; образ действия; вид, сорт; систематизация, классификация;

अथ विंशतेर्वर्षाणामत्ययेन स दरिद्रपुरुषस्तस्य गृहपतेर्निवेशने विश्रब्धो भवेन्निष्क्रमणप्रवेशे, तत्रैव च कटपलिकुञ्चिकायां वासं कल्पयेत्॥

अथ खलु भगवंस्तस्य गृहपतेर्ग्लान्यं प्रत्युपस्थितं भवेत्।

glānya *n* - слабость, бессилие, немощь;
praty-upa√sthā *buddh.*- прибегать к ч-л., опираться на ч-л., утверждаться в ч.-л.;

स मरणकालसमयं च आत्मनः प्रत्युपस्थितं समनुपश्येत्।

स तं दरिद्रपुरुषमेवं वदेत्-आगच्छ त्वं भोः पुरुष। इदं मम प्रभूतं हिरण्यसुवर्णधनधान्यकोशकोष्ठागारमस्ति।

अहं बाढग्लानः। इच्छाम्येतं यस्य दातव्यं यतश्च ग्रहीतव्यं यच्च निधातव्यं भवेत्, सर्वं संजानीयाः।

bāḍha - крепкий, сильный; крепко, сильно, очень;
saṅ√jñāX U. *buddh.*- знать (хорошо), осознавать, обдумывать;

तत्कस्य हेतोः? यादृश एव अहमस्य द्रव्यस्य स्वामी, तादृशस्त्वमपि।

मा च मे त्वं किंचिदतो विप्रणाशयिष्यसि॥

vi-pra√ṇāśaya *caus. buddh.* - допустить потерю, стать причиной утраты ч.-л.;

अथ खलु भगवन् स दरिद्रपुरुषोऽनेन पर्यायेण तच्च तस्य गृहपतेः प्रभूतं हिरण्यसुवर्णधनधान्यकोशकोष्ठागारं संजानीयात्।

आत्मना च ततो निःस्पृहो भवेत्। न च तस्मात् किंचित् प्रार्थयेत्, अन्तशः सक्तुप्रस्थमूल्यमात्रमपि।

antaśas *adv. buddh.* - по меньшей мере, в крайнем случае, столь много как;
prastha *m* - мера веса (по разным версиям в 6, 16 или 32 палы; pala *n* – мера веса в 93, 312 гр.);

तत्रैव च कटपलिकुञ्चिकायां वासं कल्पयेत्, तामेव दरिद्रचिन्तामनुविचिन्तयमानः॥

anu-vi√cint X P. *buddh.*- думать, считать, полагать;

अथ खलु भगवन् स गृहपतिस्तं पुत्रं शक्तं परिपालकं परिपक्वं विदित्वा

paripālaka - защищающий, поддерживающий, заботящийся (о собственности);
paripakva *buddh.*- полностью развит;

अवमर्दितचित्तमुदारसंज्ञया च पौर्विकया दरिद्रचिन्तया आर्तीयन्तं जेह्रीयमाणं जुगुप्समानं विदित्वा

ava√mard IX P. - разрушать, ломать, давить;
udāra *buddh.* - низкий, грубый (udāra-saṅjñā - низкий образ мыслей, грубый ум); *однако skr.* udāra *m* возвышенный, благородный; прекрасный;
ārtīyant (p.pr.act. *от* √ārtīyate *buddh.)* - страдающий, претерпевающий;

मरणकालसमये प्रत्युपस्थिते तं दरिद्रपुरुषमानाय्य महतो ज्ञातिसंघस्योपनामयित्वा राज्ञो वा राजमात्रस्य वा पुरतो नैगमजानपदानां च संमुखमेवं संश्रावयेत्

upa√nāmaya *caus. buddh.* - давать, приносить; представлять, вводить куда-либо;

-शृण्वन्तु भवन्तः, अयं मम पुत्र औरसो मयैव जनितः।

अमुकं नाम नगरम्। तस्मादेष पञ्चाशद्वर्षो नष्टः।

amuka - такой-то, имярек;

अमुको नामैष नाम्ना। अहमप्यमुको नाम।

ततश्चाहं नगरादेतमेव मार्गमाण इहागतः।

एष मम पुत्रः, अहमस्य पिता। यः कश्चिन्ममोपभोगोऽस्ति, तं सर्वमस्मै पुरुषाय निर्यातयामि।

upabhoga *m* - наслаждение, использование, еда; доход, выручка;
nir√yātaya *caus. buddh.* - давать, дарить; возвращать;

यच्च मे किंचिदस्ति प्रत्यात्मकं धनम्, तत्सर्वमेष एव जानाति॥

pratyātmaka *buddh.* - собственный, принадлежащий кому-либо;

अथ खलु भगवन् स दरिद्रपुरुषस्तस्मिन् समये इममेवंरूपं घोषं श्रुत्वा आश्चर्याद्भुतप्राप्तो भवेत्।

एवं च विचिन्तयेत्-सहसैव मयेदमेव तावद् हिरण्यसुवर्णधनधान्यकोशकोष्ठागारं प्रतिलब्धमिति॥

एवमेव भगवन्वयं तथागतस्य पुत्रप्रतिरूपकाः।

pratirūpaka *n* - образ, изображение, картина;

तथागतश्च अस्माकमेवं वदति-पुत्रा मम यूयमिति, यथा स गृहपतिः।

वयं च भगवंस्तिसृभिर्दुःखताभिः संपीडिता अभूम।

duḥkhatā *f buddh.* - (состояние) несчастья;

कतमाभिस्तिसृभिः? यदुत दुःखदुःखतया संस्कारदुःखतया विपरिणामदुःखतया च।

vipariṇāma *n* - изменение; *buddh.* превратность, чередование, изменение к худшему;

संसारे च हीनाधिमुक्तिकाः। ततो वयं भगवता बहून् धर्मान् प्रत्यवरान् संकारधानसदृशाननुविचिन्तयिताः।

adhimuktika *buddh.* - имеющий большой интерес, увлеченный;
pratyavara - менее значительный, менее ценный, чем (+Abl.);

तेषु चास्म प्रयुक्ता घटमाना व्यायच्छमानाः।

√ghaṭ I Ā. - стараться; делать, производить; происходить, иметь место;
vy-ā√yam (I P. vyāyacchati) - вытягиваться, простираться; стараться, стремиться; бороться;

निर्वाणमात्रं च वयं भगवन् दिवसमुद्रामिव पर्येषमाणा मार्गामः।

√mārg I, X P. - искать;

तेन च वयं भगवन् निर्वाणेन प्रतिलब्धेन तुष्टा भवामः।

बहु च लब्धमिति मन्यामहे तथागतस्यान्तिकात् एषु धर्मेष्वभियुक्ता घटित्वा व्यायमित्वा।

abhi√yuj *buddh.pass.* - заниматься ч.-л., направлять (*внимание, усилия на ч.-л.*);

प्रजानाति च तथागतोऽस्माकं हीनाधिमुक्तिकताम्, ततश्च भगवानस्मानुपेक्षते, न संभिनत्ति, नाचष्टे

upekṣ (upa√īkṣ) I Ā - пренебрегать, ожидать;
saṃ√bhid VII P. *buddh.* - соединять; рассматривать ч.-л., заниматься решением (проблемы);

-योऽयं तथागतस्य ज्ञानकोशः, एष एव युष्माकं भविष्यतीति।

भगवांश्चास्माकमुपायकौशल्येन अस्मिंस्तथागतज्ञानकोशे दायादान् संस्थापयति।

dāyāda *m* - наследник, преемник (*от* dāya *m* - часть, доля; наследство);

निःस्पृहाश्च वयं भगवन्।

तत एवं जानीम-एतदेवास्माकं बहुकरं यद्वयं तथागतस्यान्तिकाद्दिवसमुद्रामिव निर्वाणं प्रतिलभामहे।

bahukara *buddh.* - очень полезный, очень поддерживающий;

ते वयं भगवन् बोधिसत्त्वानां महासत्त्वानां तथागतज्ञानदर्शनमारभ्योदारां धर्मदेशनां कुर्मः।

तथागतज्ञानं विवरामो दर्शयाम उपदर्शयामः।

vi√var I, V, IX U. - открывать, показывать;

वयं भगवंस्ततो निःस्पृहाः समानाः।

तत्कस्य हेतोः? उपायकौशल्येन तथागतोऽस्माकमधिमुक्तिं प्रजानाति।

तच्च वयं न जानीमो न बुध्यामहे यदिदं भगवता एतर्हि कथितम्-यथा वयं भगवतो भूताः पुत्राः,

भगवांश्चास्माकं स्मारयति तथागतज्ञानदायादान्।

तत्कस्य हेतोः? यथापि नाम वयं तथागतस्य भूताः पुत्राः इति, अपि तु खलु पुनर्हीनाधिमुक्ताः।

सचेद्भगवानस्माकं पश्येदधिमुक्तिबलम्, बोधिसत्त्वशब्दं भगवानस्माकमुदाहरेत्।

वयं पुनर्भगवता द्वे कार्ये कारापिताः-बोधिसत्त्वानां चाग्रतो हीनाधिमुक्तिका

इत्युक्ताः, ते चोदारायां बुद्धबोधौ समादापिताः,

sam-ā√dāpaya *buddh.* - понуждать взять ч.-л., побуждать (к просветлению),

अस्माकं चेदानीं भगवानधिमुक्तिबलं ज्ञात्वा इदमुदाहृतवान्।

अनेन वयं भगवन् पर्यायेणैवं वदामः

सहसैवास्माभिर्निःस्पृहैराकाङ्क्षितममार्गितमपर्येषितमचिन्तितमप्रार्थितं सर्वज्ञतारत्नं प्रतिलब्धं यथापीदं तथागतस्य पुत्रैः॥

अथ खल्वायुष्मान् महाकाश्यपस्तस्यां वेलायामिमा गाथा अभाषत्—

आश्चर्यभूताः स्म तथाद्भुताश्च औद्बिल्यप्राप्ताः स्म श्रुणित्व घोषम्।

सहसैव अस्माभिरयं तथाद्य मनोज्ञघोषः श्रुतु नायकस्य॥१॥

manojña - приятный, прекрасный;

विशिष्टरत्नान महन्तराशिर्मुहूर्तमात्रेणयमद्य लब्धः।

rāśi *m* - куча, скопление;

न चिन्तितो नापि कदाचि प्रार्थितस्तं श्रुत्व आश्चर्यगताः स्म सर्वे॥२॥

यथापि बालः पुरुषो भवेत उत्प्लावितो बालजनेन सन्तः।

ut√plāvaya *caus. buddh.* - праздновать; прельщать, увлекать, соблазнять, совращать, отвлекать от ч.-л.; обманывать, вводить в заблуждение;

पितुः सकाशातु अपक्रमेत अन्यं च देशं व्रजि सो सुदूरम्॥३॥

पिता च तं शोचति तस्मि काले पलायितं ज्ञात्व स्वकं हि पुत्रम्।

शोचन्तु सो दिग्विदिशासु हंचे वर्षाणि पञ्चाशदनूनकानि॥४॥

haṅce 3 sg. opt. *buddh.* см. skr. √añc I U. - идти, бродить; изгибаться;

तथा च सो पुत्र गवेषमाणो अन्यं महन्तं नगरं हि गत्वा।

निवेशनं मापिय तत्र तिष्ठेत्समर्पितो कामगुणेहि पञ्चभिः॥५॥

√māpaya (*caus. om* √mā) - измерять, строить;
samarpita *buddh.* - находящийся под влиянием, занятый; хорошо обеспеченный;
kāmaguṇa (kāma-guṇa) *buddh. m pl.* - качества желаний, объекты (пяти) чувств;

बहुं हिरण्यं च सुवर्णरूप्यं धान्यं धनं शङ्खशिलाप्रवालम्।

हस्ती च अश्वाश्च पदातयश्च गावः पशूश्चैव तथैडकाश्च॥६॥

padāti *m* - пешеход, пехотинец; наемный работник, слуга;

प्रयोग आयोग तथैव क्षेत्रा दासी च दासा बहु प्रेष्यवर्गः।

preṣya *m* - посыльный; слуга, раб;

सुसत्कृतः प्राणिसहस्रकोटिभी राज्ञश्च सो वल्लभु नित्यकालम्॥७॥

कृताञ्जली तस्य भवन्ति नागरा ग्रामेषु ये चापि वसन्ति ग्रामिणः।

बहुवाणिजास्तस्य व्रजन्ति अन्तिके बहूहि कार्येहि कृताधिकाराः॥८॥

एतादृशो ऋद्धिमतो नरः स्याज्जीर्णश्च वृद्धश्च महल्लकश्च।

ṛddhimant - богатый, процветающий, благополучный, успешный;

स पुत्रशोकं अनुचिन्तयन्तः क्षपेय रात्रिंदिव नित्यकालम्॥९॥

√kṣapaya (*caus. от* √kṣi) - разрушать, заканчивать; проводить (время);

स तादृशो दुर्मति मह्य पुत्रः पञ्चाश वर्षाणि तदा पलायकः।

durmati - глупый, невежественный;
palāyaka *m* - беглец;

अयं च कोशो विपुलो ममास्ति कालक्रिया चो मम प्रत्युपस्थिता॥१०॥

vipula - обширный, большой;

सो चापि बालो तद तस्य पुत्रो दरिद्रकः कृपणकु नित्यकालम्।

daridraka *buddh.* - бедный;

ग्रामेण ग्रामं अनुचंक्रमन्तः पर्येषते भक्त अथापि चोडम्॥११॥

bhakta *n* - еда;
coḍa *n, m buddh.* - одежда;

पर्येषमाणोऽपि कदाचि किंचिल्लभेत किंचित् पुन नैव किंचित्।

स शुष्यते परसरणेषु बालो दद्रूय कण्डूय विदिग्धगात्रः॥१२॥

saraṇa *buddh.* = *skt.* śaraṇa -дом, убежище;
dadrū *f* - кожная сыпь, вид проказы;
kaṇḍū *f* - зуд, чесотка;
vidigdha - измазанный, покрытый;

सो च व्रजेत्तं नगरं यहिं पिता अनुपूर्वशो तत्र गतो भवेत।

yahim - Loc.sg. *от* yad; *adv.* yarhi;
anupūrvaśas *adv.* - обычно, сначала;

भक्तं च चोलं च गवेषमाणो निवेशनं यत्र पितुः स्वकस्य॥१३॥

सो चापि आढ्यः पुरुषो महाधनो द्वारस्मि सिंहासनि संनिषण्णः।

परिवारितः प्राणिशतैरनेकैर्वितान तस्या विततोऽन्तरीक्षे॥१४॥

आप्तो जनश्चास्य समन्ततः स्थितो धनं हिरण्यं च गणेन्ति केचित्।

āpta (p.p. *от* √āp) - достигнутый, полученный, созданный, наполненный; доверенный, надежный, уважаемый;

केचित्तु लेखानपि लेखयन्ति केचित् प्रयोगं च प्रयोजयन्ति॥१५॥

lekha *m* - письмо, письменный документ;
pra√yojaya *caus.* - бросать, направлять, выпускать; произносить; показывать, представлять (на сцене); начинать, использовать; заниматься; сосредотачивать (ум);

सो चा दरिद्रो तहि एतु दृष्ट्वा विभूषितं गृहपतिनो निवेशनम्।

tahi, tahiṃ - Loc.sg. *от* tad; *adv.* там;

कहिं नु अद्य अहमत्र आगतो राजा अयं भेष्यति राजमात्रः॥१६॥

kahi, kahiṃ - Loc.sg. *от* ka, *либо вариант adv.* karhi;

मा दानि दोषं पि लभेयमत्र गृह्णित्व वेष्टिं पि च कारयेयम्।

veṣṭi *f buddh.* - принудительные работы;

अनुचिन्तयन्तः स पलायते नरो दरिद्रवीथीं परिपृच्छमानः॥१७॥

सो चा धनी तं स्वकु पुत्र दृष्ट्वा सिंहासनस्थश्च भवेत् प्रहृष्टः।

स दूतकान् प्रेषयि तस्य अन्तिके आनेथ एतं पुरुषं दरिद्रम्॥१८॥

समनन्तरं तेहि गृहीतु सो नरो गृहीतमात्रोऽथ च मूर्छ गच्छेत्।

samantataram *adv.* - со всех сторон, вокруг; полностью, всячески;
mūrchā *f* - обморок, оцепенение;

ध्रुवं खु मह्यं वधका उपस्थिताः किं मह्य चोडेन थ भोजनेन वा॥१९॥

khu *buddh. = skt.* khalu;
vadhaka *m* - убийца, палач;

दृष्ट्वा च सो पण्डितु तं महाधनी हीनाधिमुक्तो अयु बाल दुर्मतिः।

न श्रद्दधी मह्यमिमां विभूषितां पिता ममायं ति न चापि श्रद्दधीत्॥२०॥

vibhūṣitā *f buddh.* - роскошь, богатство, пышность, великолепие;

पुरुषांश्च सो तत्र प्रयोजयेत वङ्काश्च ये काणक कुण्ठकाश्च।

vaṅka *buddh.* - согнутый, искривленный; неискренний, обманчивый; (skt. vakra)
kāṇaka *buddh.* - кривой, одноглазый (skt. kāṇa)
kuṇṭhaka, kuṇḍaka *buddh.*- обезображенный, изувеченный;

कुचेलकाः कृष्णक हीनसत्त्वाः पर्येषथा तं नरु कर्मकारकम्॥२१॥

kucelaka *buddh.* - плохо одетый (skt. kucela);

संकारधानं इमु मह्य पूतिकमुच्चारप्रस्रावविनाशितं च।

uccāra *m* - экскременты, фекалии;
prasrāva *m* - моча;
pūtika - грязный, нечистый; зловонный, вонючий;
vināśita - очень разрушенный;

तं शोधनार्थाय करोहि कर्म द्विगुणं च ते वेतनकं प्रदास्ये॥२२॥

एतादृशं घोष श्रुणित्व सो नरो आगत्य संशोधयि तं प्रदेशम्।

तत्रैव सो आवसथं च कुर्यान्निवेशनस्य पलिकुञ्चिकेऽस्मिन्॥२३॥

āvasatha *m* - жилище, место жительства;
palikuñcika *m, n buddh.* - хижина;

सो चा धनी तं पुरुषं निरीक्षेद्गवाक्ष ओलोकनकेहि नित्यम्।

olokanaka *buddh.n* - окно;

हीनाधिमुक्तो अयु मह्य पुत्रः संकारधानं शुचिकं करोति॥२४॥

स ओतरित्वा पिटकं गृहीत्वा मलिनानि वस्त्राणि च प्रावरित्वा।

उपसंक्रमेत्तस्य नरस्य अन्तिके अवभर्त्सयन्तो न करोथ कर्म॥२५॥

ava√bharts (p.pr. avabhartsayant) - удерживать угрозой, бранить;

द्विगुणं च ते वेतनकं ददामि द्विगुणं च भूयस्तथ पादम्रक्षणम्।

mrakṣaṇa *n* - мазь, притирание, масло;

सलोणभक्तं च ददामि तुभ्य शाकं च शाटिं च पुनर्ददामि॥२६॥

loṇa = lavaṇa;
śāka *n* - зелень, овощи;

एवं च तं भर्त्सिय तस्मि काले संश्लेषयेत्तं पुनरेव पण्डितः।

√bharts X U. - грозить, бранить, оскорблять;
saṃ√śleṣaya *caus.* - соединять, связывать, идти на контакт;

सुष्ठुं खलू कर्म करोषि अत्र पुत्रोऽसि व्यक्तं मम नात्र संशयः॥२७॥

suṣṭhu *buddh.* - хороший, превосходный;
vyaktam *adv.* - ясно, очевидно, несомненно;

स स्तोकस्तोकं च गृहं प्रवेशयेत्कर्मं च कारापयि तं मनुष्यम्।

stoka - маленький, короткий; *Acc. adv.;*

विंशच्च वर्षाणि सुपूरितानि क्रमेण विश्रम्भयि तं नरं सः॥२८॥

pūrita - p.p.caus. *от* √par;
vi√śrambhaya *caus.* - смягчать, внушать доверие;

हिरण्यु सो मौक्तिकु स्फाटिकं च प्रतिशामयेत्तत्र निवेशनस्मिन्।

mauktika *m* - жемчуг;
sphāṭika *n* - кристалл;
prati√śāmaya *buddh.* - запасать, хранить; откладывать, убирать; принимать, укрывать;

सर्वं च सो संगणनां करोति अर्थं च सर्वं अनुचिन्तयेत॥२९॥

saṅgaṇanā *f buddh.* - собрание, скопление, встреча;
anu√cint X P. - думать, заботиться о к.-л., ч.-л.;

बहिर्धा सो तस्य निवेशनस्य कुटिकाय एको वसमानु बालः।

bahirdhā *adv.* - снаружи, вне ч.-л.;
kuṭikā *f* - хижина;

दरिद्रचिन्तामनुचिन्तयेत न मेऽस्ति एतादृश भोग केचित्॥३०॥

ज्ञात्वा च सो तस्य इमेवरूपमुदारसंज्ञाभिगतो मि पुत्रः।

स आनयित्वा सुहृज्ञातिसंघं निर्यातयिष्याम्यहु सर्वमर्थम्॥३१॥

राजान सो नैगमनागरांश्च समानयित्वा बहुवाणिजांश्च।

उवाच एवं परिषाय मध्ये पुत्रो ममायं चिर विप्रनष्टकः॥३२॥

pariṣā *f* - собрание;

पञ्चाश वर्षाणि सुपूर्णकानि अन्ये चऽतो विंशतिये मि दृष्टः।

अमुकातु नगरातु ममैष नष्टो अहं च मार्गन्त इहैवमागतः॥३३॥

सर्वस्य द्रव्यस्य अयं प्रभुर्मे एतस्य निर्यातयि सर्वशेषतः।

करोतु कार्यं च पितुर्धनेन सर्वं कुटुम्बं च ददामि एतत्॥३४॥

kuṭumba *n* - дом, хозяйство; семья;

आश्चर्यप्राप्तश्च भवेन्नरोऽसौ दरिद्रभावं पुरिमं स्मरित्वा।

हीनाधिमुक्तिं च पितुश्च तान् गुणाँल्लब्ध्वा कुटुम्बं सुखितोऽस्मि अद्य॥३५॥

तथैव चास्माक विनायकेन हीनाधिमुक्तित्व विजानियान।

vināyaka *buddh. m* - *эпитет Будды,* Вождь, Ведущий;

न श्रावितं बुद्ध भविष्यथेति यूयं किल श्रावक मह्य पुत्राः॥३६॥

अस्मांश्च अध्येषति लोकनाथो ये प्रस्थिता उत्तममग्रबोधिम्।

adhīṣ (adhi√iṣ, adhyeṣati I P.) *buddh.* - просить, давать указания;

तेषां वदे काश्यप मार्ग नुत्तरं यं मार्ग भावित्व भवेयु बुद्धाः॥३७॥

वयं च तेषां सुगतेन प्रेषिता बहुबोधिसत्त्वान महाबलानाम्।

अनुत्तरं मार्ग प्रदर्शयाम दृष्टान्तहेतूनयुतान कोटिभिः॥३८॥

pra√darśaya *caus.*- показывать, объяснять, учить;

dṛṣṭānta (dṛṣṭa-anta) - служащий примером; *m* пример, образец;

श्रुत्वा च अस्माकु जिनस्य पुत्रा बोधाय भावेन्ति सुमार्गमग्र्यम्।

√bhāvaya (caus. *от* √bhū) - создавать, производить, оживлять, проявлять, осуществлять, практиковать; показывать;

ते व्याक्रियन्ते च क्षणस्मि तस्मिन्भविष्यथा बुद्ध इमस्मि लोके॥३९॥

vy-ā√kar VIII P. *buddh.* - объяснять, предсказывать;

एतादृशं कर्म करोम तायिनः संरक्षमाणा इम धर्मकोशम्।

tāyin *buddh.* - святой, защитник;

प्रकाशयन्तश्च जिनात्मजानां वैश्वासिकस्तस्य यथा नरः सः॥४०॥

vaiśvāsika - надежный, заслуживающий доверия;

दरिद्रचिन्ताश्च विचिन्तयाम विश्राणयन्तो इमु बुद्धकोशम्।

vi√śrāṇaya *caus.* - отдавать, раздавать, дарить;

न चैव प्रार्थेम जिनस्य ज्ञानं जिनस्य ज्ञानं च प्रकाशयामः॥४१॥

प्रत्यात्मिकीं निर्वृति कल्पयाम एतावता ज्ञानमिदं न भूयः।

pratyātmika *buddh.*- собственный, личный, индивидуальный;

√kalpaya *caus.* - приводить в порядок, распределять, размещать; считать, думать, провозглашать;

नास्माक हर्षोऽपि कदाचि भोति क्षेत्रेषु बुद्धान श्रुणित्व व्यूहान्॥४२॥

शान्ताः किला सर्विमि धर्म नास्रवा निरोधउत्पादविवर्जिताश्च।

srava - текучий, струящийся;

न चात्र कश्चिद्भवतीह धर्मो एवं तु चिन्तेत्व न भोति श्रद्धा॥४३॥

सुनिःस्पृहा स्मा वय दीर्घरात्रं बौद्धस्य ज्ञानस्य अनुत्तरस्य।

प्रणिधानमस्माक न जातु तत्र इयं परा निष्ठ जिनेन उक्ता॥४४॥

praṇidhāna *n buddh.* - сосредоточение ума, страстное желание, обет;

niṣṭhā *f* - состояние, стойкость, преданность; несомненное знание; наивысшая точка ч.-л., совершенство, завершение;

निर्वाणपर्यन्ति समुच्छ्रयेऽस्मिन्परिभाविता शून्यत दीर्घरात्रम्।

paryanta *m* - граница, край, предел; (◦-) ограниченный, оканчивающийся ч.-л.;

samucchraya *m buddh.* - большое количество, масса; тело, телесное существование;

paribhāvita *buddh.* - проникнутый, пропитанный, насыщенный;

परिमुक्त त्रैधातुकदुःखपीडिताः कृतं च अस्माभि जिनस्य शासनम्॥४५॥

यं हि प्रकाशेम जिनात्मजानां ये प्रस्थिता भोन्ति इहाग्रबोधौ।

तेषां च यत्किंचि वदाम धर्मं स्पृह तत्र अस्माक न जातु भोति॥४६॥

तं चास्म लोकाचरियः स्वयंभूरुपेक्षते कालमवेक्षमाणः।

न भाषते भूतपदार्थसंधिं अधिमुक्तिमस्माकु गवेषमाणः॥४७॥

padārtha (pada-artha) *m* - значение слова, объект, вещь; категория;

saṅdhi *f buddh.* - соединение, связь, привязанность; складка; стремление, намерение; скрытое или тайное значение (=saṅdhā *buddh.*);

उपायकौशल्य यथैव तस्य महाधनस्य पुरुषस्य काले।

हीनाधिमुक्तं सततं दमेति दमियान चास्मै प्रददाति वित्तम्॥४८॥

√damaya *caus.* - подчинять, покорять, брать вверх над ч.-л., к.-л.;

सुदुष्करं कुर्वति लोकनाथो उपायकौशल्य प्रकाशयन्तः।

हीनाधिमुक्तान् दमयन्तु पुत्रान्दमेत्व च ज्ञानमिदं ददाति॥४९॥

आश्चर्यप्राप्ताः सहसा स्म अद्य यथा दरिद्रो लभियान वित्तम्।

फलं च प्राप्तं इह बुद्धशासने प्रथमं विशिष्टं च अनास्रवं च॥५०॥

āsrava *buddh.* - грех, порок; зло, несчастье;
anāsrava *buddh.* - чистый, безгрешный;

यच्छीलमस्माभि च दीर्घरात्रं संरक्षितं लोकविदुस्य शासने।

dīrgharātram (dīrgha-rātram) *adv. buddh.* - долгое время;

अस्माभि लब्धं फलमद्य तस्य शीलस्य पूर्वं चरितस्य नाथ॥५१॥

यद्ब्रह्मचर्यं परमं विशुद्धं निषेवितं शासनि नायकस्य।

ni√ṣev (ni√sev) I Ā. - обитать, прислуживать; пребывать, почитать;

तस्यो विशिष्टं फलमद्य लब्धं शान्तं उदारं च अनास्रवं च॥५२॥

अद्यो वयं श्रावकभूत नाथ संश्रावयिष्यामथ चाग्रबोधिम्।

बोधीय शब्दं च प्रकाशयामस्तेनो वयं श्रावक भीष्मकल्पाः॥५३॥

bhīṣma *buddh.* - ужасный, могучий, неодолимый;
kalpa - способный, даровитый, возможный, подобный; *m* правило, обычай, эпоха, мировой период;

अर्हन्तभूता वयमद्य नाथ अर्हामहे पूज सदेवकातः।

लोकात्समारातु सब्रह्मकातः सर्वेष सत्त्वान च अन्तिकातः॥५४॥

को नाम शक्तः प्रतिकर्तु तुभ्यमुद्युक्तरूपो बहुकल्पकोट्यः।

prati√kar VIII U. - отплатить к.-л. (за зло или добро);
ud√yuj VII U. - усердно работать, прилагать усилия;

सुदुष्कराणीदृशका करोषि सुदुष्करान्यानिह मर्त्यलोके॥५५॥

हस्तेहि पादेहि शिरेण चापि प्रतिप्रियं दुष्करकं हि कर्तुम्।

pratipriya *n buddh.* - соответствующее благодеяние; согласование;

शिरेण अंसेन च यो धरेत परिपूर्णकल्पान् यथ गङ्गवालिकाः॥५६॥

vālikā *f buddh.* - песок, песчинки;

खाद्यं ददेद्भोजनवस्त्रपानं शयनासनं चो विमलोत्तरच्छदम्।

chada *m* - покров, покрывало; крыло птицы, лист;

विहार कारापयि चन्दनामयान्संस्तीर्य चो दूष्ययुगेहि दद्यात्॥५७॥

vihāra *m buddh.* - монастырь;
dūṣya *n* - хлопчатобумажная ткань, одежда;
saṅs√tar V U., IX U., I P. - простираться, расширяться, покрывать;

गिलानभैषज्य बहुप्रकारं पूजार्थ दद्यात् सुगतस्य नित्यम्।

gilāna *buddh.* (skr. glāna) - истощенный, слабый, больной;
bhaiṣajya *n* - лекарство, лечебное средство;
prakāra *m* - сорт, вид; способ, манера;

ददेय कल्पान्यथ गङ्गवालिका नैवं कदाचित् प्रतिकर्तु शक्यम्॥५८॥

महात्मधर्मो अतुलानुभावो महर्द्धिकः क्षान्तिबले प्रतिष्ठितः।

maharddhika *buddh.* - обладающий сверхъестественной магической силой;
kṣānti *f* - терпение, терпимость;

बुद्धो महाराज अनास्रवो जिनो सहन्ति बाला न इमीदृशानि॥५९॥

अनुवर्तमानस्तथ नित्यकालं निमित्तचारीण ब्रवीति धर्मम्।

nimitta *n* - цель, причина; знак, предзнаменование; *buddh.* - личная особенность, характерная черта;

धर्मेश्वरो ईश्वरु सर्वलोके महेश्वरो लोकविनायकेन्द्रः॥६०॥

प्रतिपत्ति दर्शेति बहुप्रकारं सत्त्वान स्थानानि प्रजानमानः।

pratipatti *f* *buddh.* - поведение (особенно добродетельное поведение), практика;
pra√jñā IX P. - знать, понимать;

नानाधिमुक्तिं च विदित्व तेषां हेतूसहस्रेहि ब्रवीति धर्मम्॥६१॥

तथागतश्चर्य प्रजानमानः सर्वेष सत्त्वान थ पुद्गलानाम्।

pudgala *m* - тело; душа, личность; индивидуальность;

बहुप्रकारं हि ब्रवीति धर्मं निदर्शयन्तो इममग्रबोधिम्॥६२॥

ni√darśaya *caus.* - показывать, учить, наставлять; провозглашать;

इत्यार्यसद्धर्मपुण्डरीके धर्मपर्याये अधिमुक्तिपरिवर्तो नाम चतुर्थः॥

dharma-paryāya *m* - религиозный трактат, способ (изложения) учения; фрагмент текста;